Vol.3, No. 1 (January 2014) P. 31-32 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

संगीत : जिज्ञासा और समाधान

आलोक शुक्ल
शोध छात्र
संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
E-mail : aalok.shukla.2010@gmal.com

ललित कलाओं में संगीत कला सर्वोत्तम है क्योंकि यह स्वर और लय जैसे सूक्ष्म तत्वों पर आधारित है। सूक्ष्म तत्वों से प्राप्त आनन्द व्यक्ति को चारित्रिक उत्थान प्रदान करता है। अतः सूक्ष्म तत्वों पर आधारित कला भी उदात्त ही होगी। जब किसी विषय पर चिन्तन होता है तो उसके रहस्य उजागर होते हैं। इन रहस्यों को जानने की जिज्ञासा व्यक्ति के मन में प्रकट होती है और यही जिज्ञासा व्यक्ति को ज्ञान और प्रगति के नये कीर्तिमानों का स्पर्श कराती है। यदि ऐसी सांगीतिक जिज्ञासाओं का साथ ही साथ समाधान भी होता चले तो अनेक रहस्यों से पर्दा उठ जाता है जिनकी अनुभूतियाँ तो होती है, परन्तु अभिव्यक्ति के लिये शब्द नहीं मिलते हैं। इन्हीं सांगीतिक जिज्ञासाओं का समाधान करने हेतु डॉ0 तेज सिंह टाक जी ने अपनी पुस्तक ''संगीत : जिज्ञासा और समाधान'' में एक प्रयास किया है।

पुस्तक को चार अध्याय में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में श्रुति, ग्राम मुर्च्छना, जातिगान, गांधर्वगान एवं प्रबन्ध विषयों पर गणितीय माध्यम से तार्किक व्याख्या की गई है। द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत भारतीय संगीत में वैज्ञानिकता, नाद, ड्रोन, संवाद–विवाद, स्वरान्तर, शुद्ध विकृत स्वर और ग्राम, सप्तक बनाने की विधि, हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के दस थाट एवं उनकी वैज्ञानिकता जैसे विषयों में समाधानात्मक व्याख्या दी गई है। जिससे विषय को सरलता से समझा जा सकता है।

तृतीय अध्याय में संगीत–रत्नाकर, स्वरमेल–कलानिधि, चर्तुदण्डी– प्रकाशिका, संगीत पारिजात, रागतत्वविबोध, श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम्, अभिनव रागमंजरी, प्रणवभारती, भरत का संगीत सिद्धान्त जैसे नामचीन ग्रन्थों का सारांश रूप सरलतम भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अगर संगीत प्रेमी इन ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहते हैं तो इस पुस्तक के माध्यम से इन ग्रन्थों में दिये गये तथ्यों को आसानी से समझा जा सकता है। चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत स्वरोच्चार, रागों का ऋतुओं से सम्बन्ध, राग–रागिनी वर्गीकरण, मेलोडी व हार्मोनी, छन्द और ताल में सम्बन्ध, लयकारी, संगीत में लय का महत्व, साहित्य और संगीत का सम्बन्ध, कटपयादि संज्ञा एवं बहत्तर मेल जैसे गौण विषयों पर निबन्धात्मक ढंग से समझाने का प्रयास किया गया है। अन्त में एक परिशिष्ट भी दिया गया है जिसमें मध्ययुगीन ग्रन्थों में गणित के महत्व को दिखाते हुए पं0 अहोबल, श्रीनिवास द्वारा वीणा के स्वर स्थापना, 72 मेल रचना, स्वरों में श्रुति स्थापना एवं पं0 अहोबल द्वारा बताये गये सम्पूर्ण, षाड़व, औड़व मेल और उनकी मूर्च्छनाएँ विषयों पर चिन्तन किया गया है। डॉ0 टाक जी की इस पुस्तक में सरल भाषा एवं तथ्यों को समझाने

के लिये सारणियों का प्रयोग किया गया है। डा0 टाक जी दृष्टिबाधित हैं इसलिए कुछ स्थानों में मुद्रण की त्रुटियाँ दृष्टिगत हैं विषयगत नहीं। संगीत से जुड़े सभी विद्यार्थियों, जिज्ञासुओं के लिये यह पुस्तक उपयोगी साबित होगी।

पुस्तक – संगीत : जिज्ञासा एवं समाधान

लेखक – डॉ0 तेज सिंह टाक

प्रकाशक– राधा पब्लिकेशन

4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002

मूल्य – 650/– रूपये